PAPER-III
VISUAL ARTS

Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) ____________________________
   (Name) ______________________________
2. (Signature) ____________________________
   (Name) ______________________________

Roll No. | | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No.___________________________________

(In words)

J 7 9 1 1

Time : 2 $^1/_2$ hours] [Maximum Marks : **200**

Number of Pages in this Booklet : **32** Number of Questions in this Booklet : **19**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.
   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your Name, Roll Number, Phone Number or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, or use abusive language or employ any other unfair means, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।
   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर नियत स्थान के अलावा अपना नाम, रोल नम्बर, फोन नम्बर या कोई भी ऐसा चिह्न जिससे आपकी पहचान हो सके, अंकित करते हैं अथवा अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, या कोई अन्य अनुचित साधन का प्रयोग करते हैं, तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित किये जा सकते हैं ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (केलकुलेटर) या लॉग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**

VISUAL ARTS

दृश्य कलाएँ

PAPER – III

प्रश्नपत्र – III

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खंड हैं । अभ्यर्थी इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार दें ।

SECTION – I
खंड – I

Note : This section consists of **two** essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 marks)**

नोट : इस खंड में **बीस–बीस (20)** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पाँच सौ (500)** शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

1. (a) Discuss the architecture of 'Taj Mahal', as the highest achievement of Indo-Islamic architecture.

   (क) इंडो-इस्लामिक स्थापत्य की उच्चतम उपलब्धि के रूप में ताजमहल के स्थापत्य की चर्चा कीजिए ।

   OR / अथवा

   (b) Discuss the major trends of contemporary Indian Painting.

   (ख) समकालीन भारतीय चित्रकला की मुख्य प्रवृत्तियों की चर्चा कीजिए ।

   OR / अथवा

   (c) Discuss the development of Sculptural Art from the British Art School till the contemporary period.

   (ग) ब्रिटिश आर्ट स्कूल से समकालिक युग तक मूर्तिकला के विकास की चर्चा कीजिए ।

   OR / अथवा

   (d) Discuss the Celebrity Endorsement in building of Brand Image of Corporates. Name Five Celebrities as Brand Ambassadors and the products they endorsed.

   (घ) कॉर्पोरेट्स की ब्रांड छवि निर्मित करने में प्रतिष्ठित व्यक्ति के समर्थन की चर्चा कीजिए । ब्रांड एम्बेसेडरों के रूप में पाँच प्रतिष्ठित व्यक्तियों के और उन्होंने जिस वस्तु का समर्थन किया उसके नाम बताइये ।

   OR / अथवा

   (e) Write a critical note on the Etchings created by Albrecht Durer.

   (ङ) अल्ब्रेख्त ड्यूरर द्वारा सृजित उत्कीर्णनों पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए ।

2. (a) Critically examine the merits of Gandharan Art and its impact on Indian Art of Post-Kushana period.

(क) गांधार कला के गुणों और उत्तर-कुषाण युग की भारतीय कला पर उसके प्रभाव का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए ।

OR / अथवा

(b) Evaluate the art style of Saroj Gogi Pal with reference to feminism.

(ख) नारीवाद के संदर्भ में सरोज गोगी पाल की कला शैली का मूल्यांकन कीजिए ।

OR / अथवा

(c) Write in detail about two important Indian Contemporary Ceramic Sculptors with a special reference to their work.

(ग) दो महत्त्वपूर्ण भारतीय समकालीन सिरैमिक मूर्तिकारों के कार्यों के संदर्भ में सविस्तार लिखिए ।

OR / अथवा

(d) What is Offset Printing ? Discuss the functions of its different operational units.

(घ) ऑफसेट प्रिंटिंग क्या है ? इसके विभिन्न प्रचालनात्मक इकाइयों के कार्यों की विवेचना कीजिए ।

OR / अथवा

(e) Discuss the print making technique of contemporary Indian Artist Anupam Sud.

(ङ) समकालीन भारतीय कलाकार अनुपम सूद की प्रिंट तैयार करने की तकनीकों की विवेचना कीजिए ।

SECTION – II
खंड – II

Note : This section contains **three (3)** questions from each of the electives/specializations. The candidate has to choose only one elective/specialization and answer all the three questions from it. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words. **(3 × 15 = 45 marks)**

नोट : इस खण्ड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता से **तीन (3)** प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल **एक** ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता को चुनकर उसी के **तीनों** प्रश्नों का उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह (15)** अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ (300)** शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

History of Art
कला का इतिहास

3. Discuss the evolution of Kangra Paintings under the patronage of Raja Sansar Chand.
राजा संसार चंद के संरक्षण में कांगड़ा चित्रकारी के विकास की विवेचना कीजिए ।

4. What is Art Historical Methodology ? Explain.
कला ऐतिहासिक प्रविधि क्या है ? व्याख्या कीजिए ।

5. Discuss the Architecture of the Sun Temple of Konark.
कोणार्क के सूर्य मंदिर के स्थापत्य की विवेचना कीजिए ।

Drawing & Painting
रेखाचित्र और चित्रकारी

3. What is Abstract Expressionism ? Explain with examples.
अमूर्त अभिव्यंजनावाद क्या है ? सोदाहरण व्याख्या कीजिए ।

4. Compare Miniature paintings of Mewar and Bundi Schools.
मेवाड़ और बूंदी स्कूलों की लघुचित्रकारी की तुलना कीजिए ।

5. Write a critical note on Wall paintings of Cave no 17, Ajanta.
अजंता की गुफा सं. 17 की भित्ति चित्रकारी पर समालोचनात्मक टिप्पणी लिखिए ।

Sculpture
मूर्तिकला

3. Describe in detail the characteristic feature of Egyptian Relief Sculpture with a special reference to the law of Frontality and treatment of Space.
सम्मुखता के नियम और अंतराल के प्रयोग के विशेष संदर्भ में मिश्र की रिलीफ मूर्ति कला की प्रमुख विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए ।

4. Express the significance of forms in the metal sculptures of P. Nandgopal.
पी. नंदगोपाल के धातु मूर्तिकला के रूपों के महत्त्व की व्याख्या कीजिए ।

5. Describe how industrialization brought out changes in Sculptors' attitude all around the world.
औद्योगीकरण पूरे विश्व के मूर्तिकारों की अभिवृत्ति में कैसा परिवर्तन लाया, वर्णन कीजिए ।

Print Making
छापा-चित्रण

3. Write on the use of mixed-media in Print making.
छापा चित्रण में मिश्रित मीडिया के बारे में लिखिए ।

4. Write about the Viscosity and non-toxic printmaking.
विसकोसिटी और नॉन-टॉक्सिक प्रिंट मेकिंग के बारे में लिखिए ।

5. Write an appreciation on the prints by Jyoti Bhatt.
ज्योति भट्ट के प्रिंट्स की अच्छाइयों के बारे में लिखिए ।

Applied Art
व्यवहारिक कला

3. 'Design is art that makes it useful.' Explain.
"अभिकल्प / रूपांकन कला है जो उसे उपयोगी बनाती है," व्याख्या कीजिए ।

4. Write an appreciative estimation on the contribution of Prasoon Joshi, the Indian Ad-Guru.
प्रसून जोशी, भारतीय विज्ञापन गुरु के योगदान का प्रशंसात्मक मूल्यांकन लिखिए ।

5. What is "Colour Gamut" ? Explain Subtractive and Additive colours in relation to Designing.
'कलर गेमट' क्या है ? डिजाईनिंग के सम्बन्ध में सबट्रेक्टिव एवं योगात्मक रंगों की व्याख्या कीजिए ।

SECTION – III
खंड – III

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks, each to be answered compulsorily in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 marks)**

नोट : इस खंड में **दस-दस (10-10)** अंकों के **नौ (9)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास (50)** शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

6. What is Libido ?
लिबिडो (कामलिप्सा) क्या है ?

7. Salon des Refuses
सेलों दे रेफ्यूज़े

8. Define 'Naturalism' in Gandharan Sculpture ?
गांधार मूर्तिकला में प्रकृतिवाद को परिभाषित कीजिए ।

9. Define 'Fresco Bueno' ?
'फ्रेस्को बूनो' को परिभाषित कीजिए ।

10. What is Kinetic Sculpture ?
काइनेटिक मूर्तिशिल्प क्या है ?

11. Define the 'Vasali' in Mughal paintings ?
मुगल चित्रों में 'वसली' को परिभाषित कीजिए ।

12. What is ‘Positioning’ in Advertising strategy ?
विज्ञापन नीति में ‘पोजिशनिंग’ क्या है ?

13. What is ‘Prime Time’ in Television Commercial ?
टेलीविज़न कॉमर्शियल में ‘प्राइम टाइम’ क्या है ?

14. What is 'Soap-opera' ?
'सोप-ऑपेरा' क्या है ?

SECTION – IV
खंड – IV

Note : This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.

(5 × 5 = 25 marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच (5)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच (5)** अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

Art in general is a-moral, that is, not dependent directly on moral considerations and values. The generic purpose of art is to provide aesthetic experience and enjoyment to the recipient and to give an outlet to the artist himself to reveal and express his innermost aspirations, fellings and sentiments and so also the impressions of life. A radical moral point of view, criticism of immoral practices, visualising new moral values – all these aspects become part of the artistic framework at a certain stage of

creativity, the stage at which man becomes self-conscious and treats his own conscience as well of that of other persons as supremely important.

Art is a creation of man. His creativity takes different forms and results in different kinds of art-objects. At one level, his vision and ideas get synthesised with a gross matter like stone, metal, wood and so on and carves out meaningful shapes and forms and transforms' something which is devoid of aesthetic value in its primary form into something which assumes immense aesthetic and artistic value. These are the majestic architectural structures, sculptures depicting harmonious relations of parts. The gross crude matter acquires mathematically uniform and balanced structure and provides an exciting visual sight. Such creations cannot have anything to do with morality since the purpose of the artist is to create something visually grand by exploiting the potentiality of matter to look perfectly organised, balanced, proportionate, rhythmic and poised.

As far as painting is concerned, the artist may be inspired by his moral point of view while selecting his themes and subject-matter. But the painting is not appreciated just because the theme is moral, religious or historically important. The real aesthetic appreciation is for its visual effects, the profoundly expressive outlines, colour schemes and spatial relations. Hence the aesthetic judgement of such art objects does not depend on our moral values as such. In music and dance, the performing artist is seeking to express his innermost moods and feelings; these moods and feelings transcend the moral dichotomy which is essentially relevant to human actions and intentions in the social context. A song may be appreciated for its religious or moral literary content, but its aesthetic effect consists in transforming sound into rhythmic melodious patterns capable of echoing all the shades of human feelings and moods. That is why music has an immense potentiality to move the listeners to the deepest depths. Same thing can be said about some dance forms also. Dances are meant to express in a highly stylised manner the delicate and subtlest feelings of mind. It is the spiritual element which gets articulated in music and dance.

कला सामान्यत: नैतिकता से परे होती है अर्थात् यह मूल्यों एवं नैतिक विचारों पर सीधे निर्भर नहीं होती है । कला का जातिगत उद्देश्य प्रापक (या ग्राही) को सौन्दर्यपरक बोध और आनन्द प्रदान करना और कलाकार को अपनी खुद की सर्वाधिक अन्तरंग आकांक्षाओं, भावनाओं और मनोभावों और जीवन के संस्कारों को प्रकट करने एवं अभिव्यक्त करने का मार्ग देना है । आमूल चूल नैतिक दृष्टिकोण, अनैतिक व्यवहारों की आलोचना, नूतन नैतिक मूल्यों की कल्पना – यह सब पहलू सृजनात्मकता की एक अवस्था पर कलात्मक ढाँचे का भाग बन जाते हैं । इस अवस्था पर व्यक्ति स्व-अभिज्ञ हो जाता है और अपनी खुद की चेतना और साथ ही अन्य व्यक्तियों की चेतना को सर्वोच्च महत्त्व का मानता है ।

कला मानव की उत्पत्ति है । उसकी सृजनात्मकता भिन्न-भिन्न रूप की होती है और भिन्न प्रकार की कला-वस्तुओं में परिणित होती है । एक स्तर पर, उसकी कल्पना दृष्टि और विचार स्थूल पदार्थ, जैसे, पत्थर, धातु, काष्ठ इत्यादि के साथ संश्लेषित हो जाते हैं और अर्थपूर्ण आकार व रूप ग्रहण करते हैं और एक चीज जो अपने प्राथमिक रूप में सौन्दर्यपरक मूल्य से वंचित है को एक ऐसी चीज में रूपान्तरित कर देते हैं जो कि अत्यधिक सौन्दर्यपरक व कलात्मक मूल्य की बन जाती है । इसके उदाहरण ऐश्वर्यपूर्ण वास्तुकलात्मक ढाँचे, मूर्तियाँ हैं जो अंशों का समरसपूर्ण सम्बन्ध चित्रित करते हैं । एक स्थूल भोंडा (अशोधित) पदार्थ गणितीय रूप से समरसपूर्ण और संतुलित ढाँचा अर्जित कर लेता है और देखने की उत्तेजनापूर्ण वस्तु प्रदान करता है । ऐसे सृजनों का नैतिकता के साथ कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता है क्योंकि कलाकार का उद्देश्य, पदार्थ को अंत:शक्ति का पूर्ण उपयोग करके ऐसी कोई शानदार दीखने वाली वस्तु का सृजन करता है जिससे कि वो वस्तु पूर्णतया संगठित, संतुलित, आनुपातिक, लयपूर्ण और शान्त दिखाई दे ।

जहाँ तक चित्र का प्रश्न है, कलाकार अपने प्रसंग और विषय सामग्री का चयन करते समय अपने नैतिक दृष्टिकोण से प्रेरित हो सकता है । परन्तु चित्र को प्रशंसा सिर्फ इसलिये नहीं मिलती है कि प्रसंग विषय नैतिक, धार्मिक या ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण हैं । वास्तविक सौन्दर्यपरक प्रशंसा उसके दृष्टिक प्रभावों, गहन अभिव्यंजनापूर्ण रेखाओं, रंग योजनाओं और स्थानिक सम्बन्धों के लिये होती है । अत:, ऐसी कलात्मक वस्तुओं के सम्बन्ध में सौन्दर्यपरक निर्णय हमारे नैतिक मूल्यों पर निर्भर नहीं करता है । संगीत और नृत्य में, प्रदर्शन कलाकार अपने अन्तरंग मूडों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने की चेष्टा करता है । मूड और भावनाएँ, नैतिक द्विभाजन जो सामाजिक सन्दर्भ में मानवीय कृत्यों व प्रयोजनों के अनिवार्यत: प्रासंगिक होता है, से परे चले

जाते हैं । एक गीत की, उसकी धार्मिक, या नैतिक साहित्यिक विषय-वस्तु के लिये शायद प्रशंसा की जा सकती है, परन्तु उसका सौन्दर्यपरक प्रभाव, ध्वनि को लयात्मक सुरीले (गीतमय) स्वरूपों में रूपान्तरित करने में है जो, मानवीय भावनाओं और मूडों के समस्त स्तरों को गुंजायमान करने में समर्थ होता है । इसी कारण, संगीत में, श्रोताओं को गहनतम गहराइयों तक प्रभावित करने की प्रचुर सामर्थ्य विद्यमान है । यही बात नृत्य के कुछ रूपों के बारे में भी कही जा सकती है । नृत्य मस्तिष्क की नाजुक व सूक्ष्म भावनाओं को अत्याधिक शैलीगत रूपों में अभिव्यक्त करने के लिये हैं । संगीत और नृत्य में आध्यात्मिक तत्त्व स्पष्ट व्यक्त हो जाता है ।

15. What is supposedly the generic purpose of Art ?
कला का जातिगत उद्देश्य क्या माना जा सकता है ?

16. What are the aspects that become part of artistic framework at the self-conscious stage of creativity ?
वो कौन से पक्ष हैं जो सृजनात्मकता की स्वचेतन अवस्था पर कलात्मक ढाँचे के भाग बन जाते हैं ?

17. How does Creativity become a synergy of vision and ideas resulting into a kind of art object ?

सृजनात्मकता किस प्रकार दृष्टि और विचारों की सहक्रिया बन जाती है और कलात्मक वस्तुओं में परिणित होती है ?

18. Where does lie the real aesthetic appreciation of a painting or an art object ?

चित्र या कलात्मक वस्तु की वास्तविक सौन्दर्यपरक प्रशंसा कहाँ स्थित है ?

19. What element does get articulated in Music and Dance finally as their potential transcendation ?

संगीत एवं नृत्य में कौन सा तत्त्व अन्ततः उनकी प्रच्छन्न अनुभवतीतता के रूप में स्पष्ट अभिव्यक्त होता है ?

Space For Rough Work

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....